पंचकोशी-यात्रा

काशी की सभी यात्राओं की शीर्षस्थ होते हुए भी यह यात्रा सबसे अधिक विवादास्पद भी है। आधुनिक निबन्धकारों का मत है कि यह यात्रा प्राचीन नहीं है, वरन तेरहवीं शताबादी ईसवी के आसपास इसका प्रारम्भ हुआ है। 'कृत्यकल्पतरू' के तीर्थविनेचनकाण्ड की भूमिका में डॉ० के० वी० आर. आयंगर लिखते हैं कि लक्ष्मीधर ने इस पंचकोशी यात्रा का उल्लेख नहीं किया है। अतएव, सम्भवतः पंचकोशी मार्ग का तथा उसपर स्थित मन्दिरों का बारहवीं शताब्दी के बाद तक अस्तित्व नहीं था और उसके बाद बहुत दिनों तक यह यात्रा परमावश्यक नहीं मानी जाती थी। इ स सम्बन्ध में उन्होंने शेरिंग के इ स वाक्य का उल्लेख किया है कि पंचकोशी मार्ग पर स्थित कोई भी देवालय तीन शाताब्दियों से अधिक पुराना नहीं है। यहाँ यह विचारणीय है कि केवल पंतकोशी मार्ग का ही क्यों, काशी का कोई भी देवालय तीन सौ वर्ष से अधिक का नहीं है। तो क्या इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि काशी में प्रचीन काल में कोई देवालय नहीं था? इतना ही नहीं, दैवयोग से पंचकोशी मार्ग पर ही एक देवालय दसवीं शाताबादी का बच गया है। यह है कर्दमेश्वर का शिवालय, जहाँ पंचकोशी यात्रा का पहला आवास होता है।

डॉ. आल्टेकर तथा काशी के इतिहासकार का भी पंचकोशी यात्रा के विषय में ऐसा ही मत है। परन्तु, यथार्थतः बात ऐसी नहीं है। काशी-क्षेत्र की प्रदक्षिण बारहवीं शताबादी में तथा उसके पूर्व भी होती थी, इस बात का उल्लेख ठकृत्यकल्पतरू' में ही वर्त्तमान है, जिस ओर इन विद्वानों का ध्यान नहीं गया। तीर्थविनेचनकाण्ड के 'नानातीर्थमाहात्म्यम्' नाम के अध्याय में वासनपुराण का उद्धरण है, जिसमें समस्त भारतवर्ष के तीर्थों की याश्त्रा का वर्णन है। उसमें कहा गया है कि ' माघ मास में प्रयाग की यात्रा करने के पश्चात काशी आये और दशाश्वमेध में स्नान करके सर्वपाप हरनेवाले देवाताओं और मन्दिरों में अर्चना तथा पितरों का श्राद्ध-तर्पण किया तथा वाराणसी पुरी की प्रदक्षिणा करके और अविमुक्तेश्वर तथा केशव का पूजन करके और लोलार्क का दर्शन करके वे मधुवन को चले गयेः'३२

इस उद्धरण से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि क्षेत्र की प्रदक्षिणा उस समय भी होती थी, अपितु एक बात और भी बलात् हमारे सामने आ जाती है कि यह धारणा कि 'कृत्यकल्पतरू' के तीर्थ विवेचन काण्ड के वाराणसी-माहात्म्य-प्रकरण में काशी के विषय के सभी बातें आ गई है और जिस बात का वहाँ उल्लेख नहीं है। वह उस समय थी ही नहीं, ठीक नहीं है। डॉ. आयंगर प्रभृति विद्वान कुछ ऐसी ही धारणा बना बैठे हैं क्योंकि तीर्थों की संख्या का विवेचन करते हुए उनका यह मत है कि कृतकल्पतरू के समय काशी में केवल ३५० तीर्थ थे और काशीखण्ड के समय तक वे बढ़कर १६५० हो गए। कृत्य़कल्पतरू, पृ० ४१ से १२१ तक में तीर्थों की जो नामावली दी हुई है, उसमें पर्वतेश्वर का नाम नहीं है, यद्यपि पृ. ३९ पर पर्वतेश्वर का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उल्लेख है। इसी प्रकार, उपशान्तेश्वर के पास के कूप का, शौनकेश्वर कुण्ड का तथा ञ्यम्बक का उस नामावली में उल्लेख नहीं है; परन्तु आगे चलकर तीर्थयात्रा के सम्बन्ध में इनका नामांकन हुआ है। नवदुर्गाओं तथा नवचण्डिकाओं का नामोल्लेख भी उस नामावली में नहीं मिलता। ढुण्ढिराज तथा अन्य चार विघ्न करनेवाले विनायकों का नाम भी उस सूची में नहीं है। कृत्यकल्पतरू के तीर्थविवेचनकाण्ड में पृ० १२० पर लिंग पुराण के उद्धरण में स्पष्ट लिखा है कि इ स सूची में केवल सिद्धलिंगों, कूपों, ह्रदों, वापियों तथा कुण्डों का उल्लेख है, यद्यपि इनके अतिरिक्त सहस्त्रों लिंग और हैं, जिनका वर्णन यहाँ नहीं किया गया है। इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि यह वाराणसी के प्रधान तीर्थों की ही नामावली है, सभी तीर्थों का नहीं। कृत्यकल्पतरू के समय के ही महाराज गोविन्दचन्द्र के दानपत्रों में त्रिलोचन, लौडेश्वर तथा इन्द्रमाधव का उल्लेख है, जो इस सूची में नहीं है। पुरातत्त्व के प्रभाव से कई शिवलिंग के नाम मिलते हैं, जिनका नामांकन कृत्यकल्पतरू में नहीं हुआ।

पंचकोशी यात्रा का उल्लेख काशीखण्ड में भी नहीं है, परन्तु ब्रह्मवैवर्त्तपुराण के काशीरहस्य२३ में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है। विषय यह है कि अन्यत्र किये हुए पातकों का नाश तो काशी में प्रवेश-मात्र से हो जाता है, परन्तु काशीक्षेत्र में किये पापों से निवृत्ति किस प्रकार हो। इसी सम्बन्ध में यह कहा है कि वर्ष में दो बार, अर्थात उत्तरायण तथा दक्षिणायन में और नहीं तो कम-से-कम एक बार काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा कर लेने से उनकी निवृत्ति हो जाती हैः स्वयं विश्वेश्वर भी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

यह यात्रा वर्ष में दो बार करते हैं।

दक्षिणे तोत्तरे चैव ह्ययेन सर्वदा मया।
क्रियते क्षेत्रदाक्षिण्यं भैरवस्य भयादपि।।

(सत्तकुमारसंहिता)

यह यात्रा एक दिन, तीन दिन, चार दिन, पाँच दिन, तथा सात दिन में पूरी करने की विधि रही है; परन्तु आज कल पाँच दिन की ही प्रथा रह गई है। तदनुसार, चार विश्रामस्थल भी निर्धारित हैं। एक दिन की यात्रा में तो कहीं ठहरने का प्रश्न ही नहीं है। दो दिन में करे, तो वरणा-तट पर, अर्थात रामेश्वर में रात्रिवास करे। तीन दिन की यात्रा में भीमचण्डी तथा रामेश्वर में ठहरे चार दिन में यात्रा कनेवाला दुर्गाजी, भीमचण्डी तथा रामेश्वर में निवास करें। पाँच दिनवाले लोग कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर तथा कपिलधारा में रात्रि बितावें। राजा, वृद्ध तथा बालक को जहाँ कहीं भी सुविधा हो, वहाँ रात्रि-निवास तथा विश्राम करें।३४ काशीरहस्य३५ के अनुसार आश्विन, कार्त्तिक तथा मार्गशीर्ष और माघ, फाल्गुन, चैत्र तथा वैसाख इस यात्रा के लिए विशेष माने गये हैं। परन्तु, श्रद्धावश, यह सदैव हो सकती है।

इस यात्रा का यह विधान है कि यात्रा के एक दिन पहले व्रत अथवा हविष्यान्न का भोजन करे तथा ढुण्ढिराज का विधिवत पूजन करके रात्रि में भगवान सदाशिव का ध्यान तथा प्रार्थना करे। यात्रा के दिन प्रातःकाल गंगाजी में स्नान करके नित्ययात्रा तथा विश्वेश्वर का दर्शन-पूजन करने के उपरान्त ज्ञानवापी के समीप मुक्तिमण्डप में यात्रा का संकल्प करे। तदुपरान्त मौन होकर ढुण्ढिराज का पूजन करके उनसे यात्रासिद्धि के लिए बारम्बार मौन प्रार्थना करे और फिर विश्वेश्वर का पूजन तथा उनकी तीन प्रदक्षिणा और दण्डवत प्रणाम करने के बाद मोदादि पंचविनायकों को प्रणाम तथा उनका पूजन करते हुए आगे दण्डपाणि का पूजन करे। इसके बाद विश्वेश्वर के पश्चिम द्वार के समीप स्थित काल भैरव का पूजन करके पुनः मणिकर्णिका को जाय और वहाँ विविधपूर्वक स्नान करे। फिर, मणिकर्णिका तथा मणिकर्णेश्वर का पूजन करके सिद्धविनायक की अर्चनापूर्वक यात्रा का प्रारम्भ करे। यात्रा में पड़नेवाले तीर्थों का क्रम से नामांकन नीचे किया जाता है। यात्रा सदैव मौन होकर करनी चाहिए और यात्रा के समय सभी तीर्थ यात्री के दाहिनी ओर पड़ने चाहिए। अतएव गंगातीर के मार्ग से यात्रा करने का विधान है, अन्यथा नाव से भी लोग जाते हैं। १. गंगाकेशव तथा ललिता देवी (ललिताघाट), २. जरासन्धेश्वर (मीरघाट) ३. सोमेश्वर (मानमन्दिर घाट), ४. दाल्भ्येश्वर (वहीं), ५. शूलटंकेश्वर (दशाश्वमेधघाट), ६. आदिवाराह (वहीं) ७. दशाश्वमेधेश्वर (वहीं) ८. बन्दी देवी (वही, मकान नं. डी. १६/१००), ९. सर्वेश्वर (बबुआ पाण्डे घाट के ऊपर), १०. केदारेश्वर (केदारघाट पर प्रसिद्ध). ११. हनुमदीश्वर (हनुमान घाट पर हनुमानजी के मन्दिर के नीचे मढ़ी में), १२. असिसंगमेश्वर, १३. लोलार्क (मदैनी में) और १४. अर्कविनायक(वहीं) का दर्शन पूजन करे। १५. वहाँ से निर्दिष्ट मार्ग से जाकर दुर्गाकुण्ड (प्रसिद्ध) में स्नान करने का विधान है। अग्निपुराण के मत से केदारेश्वर के निकट गौरीकुण्ड, अर्थात केदार घाट में भी स्नान करना चाहिए। दुर्गाकुण्ड में स्नान करके १६. दुर्गविनायक का पूजन करके १७. दुर्गाजीकी अर्चना और प्रार्थना करे। वाशिष्ठलिंगपुराण में समीप की रेणुका देवी के दर्शन करने का भी उल्लेख हैं :

जय दुर्गे महादेवि जय काशिनिवासिनि।
क्षेत्रविघ्नहरे देवि पुनर्दर्शनमस्तु ते।।३६

और, पुनः पंचकोशी मार्ग पर जाकर कर्ममेश्वर की ओर चल दे। २८ मार्ग में करमा जीतपुर में विष्वक्सेनेश्वर का पूजन करते हुए कन्दवा ग्राम में पहुँचकपर २९. कर्दमकूप में स्नान तथा उसके जल का दर्शन करके वहीं पर २०. सोमनाथ, २१. विरूपाक्ष तथा २२. नीलकण्ठ की भी अर्चना करने के बाद, २३. कर्दमेश्वर का तिल तथा पंचधान्य से पूजन करे। श्राद्ध-तर्पणादि करके ब्राह्मण-भोजन के उपरान्त स्वयं भोजन करे तथा वहीं रात्रिवास करे। प्रातःकाल नित्यकर्म तथा स्नान-पूजन के बाद कर्दमेश्वर की अर्चना तथा प्रार्थना करके यात्रा पर पुनः चल पड़े।

कर्दमेश महादेव काशिवासजनप्रिय

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

त्वत्पूजनान्महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते।।३७

मार्ग में २४. नागनाथ (अमरागाँव), २५. चामुण्डा, २६. मोक्षेश्वरए २७. करूणेश्पर (अवड़े गाँव में) २८. वीरभद्र, २९. विकटाख्या दुर्गा (देवहना गाँव में) ३०. उन्मत्त भैरव, ३१. नील, ३२. कालकूट, ३३. विमला दुर्गा, ३४. महादेव, ३५. नन्दिकेश्वर, तथा भृंगी-रिटिगण, ३६. गणप्रिय (देउरा गाँव में) ३७. विरूपाक्ष (गौरा गाँव), ३८. यक्षेश्वर (मातलदेईचक में), ३९. विमलेश्वर (प्रयागपुर), ४०. मोक्षदेश्वर (वहीं), ४१. ज्ञानेश्वर (वहीं) तथा ४२. अमृतेश्वर (अवसारी गाँव) की अर्चना करते हुए ४३. गन्धर्वसागर नामक सरोवर पर पहुँचकर स्नान करे और तब ४४. भीमचण्डी देवी की दूध तथा अन्य उपचारों से पूजा करे और तचुपरान्त श्राद्धतर्पण के द्वारा देव-पितरों को तुष्ट करे और ४५. चण्डविनायक ४६. रविरक्ताक्ष गन्धर्व, तथा ४७. नरकार्णवतारक शिव का पूजन करके रात्रि को जागरण करता हुआ वहीं निवास करे। प्रातः काल स्नानादि के उपरान्त भीमचण्डी देवी का पूजन तथा प्रार्थना करके देहली-विनायक के लिए प्रस्थान करे :

भीमचण्डी प्रचण्डानि मम विघ्नानि नाशय।
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि पुनर्दर्शनमस्तु ते।।३८

४८. एकपाद गण (कचनार गाँव) को प्रणाम तथा उनका पूजन करने के बाद धनधान्य की प्राप्ति के लिए तिल तथा चावल वहाँ पृथ्वी पर छिड़ककर आगे चले। मार्ग में ४९. महाभीम गण (हरपुर गाँव में हर्रा के तालाब के सम्मीप), ५०. भैरव, तथा ५१. भैरवी (हरसोर गाँव), ५२. भूतनाथ (दीनदयालपुर), ५३. सोमनाथ, तथा लिन्धुसागरतीर्थ, ५४. कालनाथ (लँगोटिना हनुमान के समीप), ५५. कपर्दीश्वर, ५६. कामेश्वर (चौखण्डी गाँव), ५७. गणेश्वर, ५८. वीरभद्र (वहीं), ५९. चारूमुख तथा ६०. गणनाथ (भटौली गाँव), का पूजन करते हुए ६१. देहलीविनायक पहुँचने पर लडडू, लावा, चिठड़ा सत्तू तथा ऊख से उनका पूजन कर उनके मन्दिर के पीछे ६२. षोडश विनायक की अर्चना करे और रामेश्वर की ओर आगे बढ़े। मार्ग में भुइली गाँव में ६३. उद्दण्ड विनायक, तथा हीरमपुर गाँव में ६४. उत्कलेश्वर, ६५. रूद्राणी तथा उनकी तपोभूपि का दर्शन-पूजन करते हुए रामेश्वर पहुँचे। वहाँ वरणा नदी में स्नान करके तर्पण-श्राद्ध इत्यादि करे और तत्पश्चात श्वेत तिल तथा बिल्वपत्रादि से ६६. रामेश्वर का पूजन करने के बाद उनके पूर्व में ६७. सोमनाथ, ६८. भरतेश्वर, ६९. लक्ष्मणेंश्पर, ७०. शत्रुघ्नेश्वर, ७१. द्यावाभूमीश्वर तथा ७२. नहुषेश्वर की अर्चना करने के उपरान्त रामेश्वर में ही विश्राम करे। प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत होकर रामेश्वर का पूजन करे और प्रार्थना करके आगे चले :

श्रीरामेश्वररामेण पूजितरत्वं सनातन।
आज्ञान्देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते।।३९

वरणा नदी पार करके असंख्यात तीर्थ तथा असंख्यात लिगों का पूजन करके करोना गाँव में ७३. देवसंघेश्वर का पूजन करके, तथा वहाँ पर कुछ दान करके, वरणा नदी को पार करके पुनः वाराणसी क्षेत्र में स्थित ७४. पासपाणि गणेश (सदर बाजार में) का पूजन एवं पार जाकर शिवपुर में टिके। शिवपुर में टिकने का कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं है, परन्तु शिष्टाचार से स्वीकृति होने से प्रचलित है। कोटवा गाँव में वृषभध्वज तथा कपिलधारातीर्थ में वास करने का शास्त्रीय विधान है, किन्तु अब वहाँ पर वास करने का प्रचलन कम हो गया है। अब शिवपुर से चलकर वृषभध्वज होते हुए उसी दिन यात्रा समाप्त कर दी जाती है। कुछ लोग शिवपुर से प्रातःकाल चलने के पहले पाशपाणि गणेश का पुनः पूजन तथा उनसे प्रार्थना करते हैं ओर तब आगे की यात्रा को चलते हैं।

मार्ग में खजूरी गाँव में ७५. पृथ्वीश्वर का दर्शन-पूजन करके दीनदयालपुर में ७६. यूपसरोवर (सोना तालाब) में मार्जन करते हुए धीरे चलकर ७७. कपिलाह्द (कपिल धारा) पहुँचने पर वहाँ विधानपूर्वक स्नान तथा श्राद्ध-तर्पण करके ७८. वृषभध्वज का पूजन और उनसे प्रार्थना की जाती है :

वृषभध्वज देवेश पितृणां मुक्तिदायक।
आज्ञान्देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते।।४०

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

यह प्रार्थना करने के बाद कपिलधारा सारोवर की प्रदक्षिणा करके कोटवा गाँव में ७९. जवालानृसिंह की पूजा होती है और फिर वरणा पार करके वरणा-संगम-स्नान करने का विधान है। तदनन्तर, ८०. आदिकेशव, ८१. संगमेश्वर, ७२. खर्वविनायक की अर्चना करके झोली में जौ लेकर उनका विष्णु भगवान का नाम लेते हुए धीरे-धीरे पृथ्वी पर छोड़ना चाहिए और इस प्रकार ८३. प्रह्लादेश्वर, तथा ८४. त्रिलोचन का पूजन करते हुए ८५. पंचनद (पंचगंगा) में पहुँचकर स्नान करे। पुनः ८६. बिन्दुमाधव की अर्चना करके ८७. गभस्तीश्वर, ८८. मंगला गौरी, ८९. वशिष्ठ वामदेव (संकठाघाट), ९०. पर्वतेश्वर (सिन्धियाघाट), ९१. महेश्वर (मणिकर्णिका घाट पर मढ़ी में) की पूजा करके, ९२. सिद्धविनायक में जाकर उनका पूजन करके वहीं पर छप्पनों विनायाकों का ध्यान करे। ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में इन सभी विनायकों के पूजन का उल्लेख है, परन्तु अग्निपुराण में केवल ध्यान करने को कहा गया है और यही प्रचलित भी है। छप्पन विनायकों के नाम (जो पहले दिये जा चुके हैं) लेकर प्रणाम करने की परिपाटी है :

ततो गत्वा पनुर्धीमान भक्त्या सिद्धिविनायकम।
स्मृत्वा गणपतींस्तत्र सप्तावरणसंस्थितान।।

(अग्निपुराण)

(अग्निपुराण)। इसके बाद मणिकर्णिका में स्नान करके, ज्ञानवापी के समीप ९३. महेश्वर का दर्शन करके विश्वेश्वर के मन्दिर में जाकर उनका पंचोपचार पूजन करें और पुनः प्रणाम करके मुक्तिमण्डप में जाकर बैठे और विष्णु, दण्डपाणि, ढुण्ढिराज, भैरव तथा द्रुपदादित्य की तथा मोदादि पाँच गमेशों की पुनः अर्चना करके यात्रा में प्रदक्षिणा किय हुए सभी देवाताओं का क्रम से स्मरम करे, तदुपरान्त विश्वेश्वर से प्रार्थना करे और यथाशक्ति दान दे। फिर, घर जाकर श्रद्धानुसार ब्राह्मण तथा दीन-दुखियों को भोजन करायेः

इस यात्रा में इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि पंचकोशी मार्ग को जिस स्थान पर छोड़े, वहीं से पुनः यात्रा प्रारम्भ करे। ऐसे कई अवसर आते हैं लोलार्क तथा दुर्गाजी के दर्शन के लिए असी नदी के पास वाराणसी में प्रवेश होता है तथा पाशपाणि गणेश के पूजन के लिए वरणा पार करके वाराणसी में प्रवेश होता है। पृथ्वीश्वर-पूजन भी वाराणसी में होता है। इन अवसरों पर इस बात का ध्यान रखें। लगभग १०० वर्ष पहले भीमचण्डी के उत्तर भी कुछ मार्ग की गड़बड़ी होने लगी थी, परन्तु स्वर्गीय महामहोपाध्याय पण्डित बापूदेव शास्त्री के प्रयत्न से वह ठीक हो गई थी, परन्तु यात्रामार्ग इस स्थान पर अब भी कुछ गड़बड़ है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.